بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Mob:9682536974, E-Mail.: ansarullah@qadian.in 12.08.2022 محلہ احمدیہ قادیان143516 ضلع گورداسپور(پنجاب) انڈیا

जलसा सालाना बर्तानियः के हवाले से जमाअते अहमदिया पर नाज़िल होने वाले अल्लाह तआला के फ़ज़्लों का ईमान वर्धन वर्णन।

सारांश ख़ुत्बः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिहिल अज़ीज, बयान फ़र्मूदा 12 अगस्त 2022, स्थान मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद, टिलफ़ोर्ड यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ. بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ. الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ. اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ. اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ. صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ. غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ.

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु ने फ़रमाया- अलहम्दुलिल्लाह, अल्लाह तआला ने हमें जलसाए सालाना बर्तानियः आयोजित करने का सामर्थ्य प्रदान किया। हमने तीन दिनों में अल्लाह तआला की अनुकम्पाओं को बरसते देखा। जलसे का बड़ा तथा सारा साल इंतज़ार रहता है, बड़ी तय्यारियाँ भी व्यवस्थापकों को करनी पड़ती हैं परन्तु फिर भी जलसा सालाना शुरु होता है तो पता ही नहीं चलता कि तीन दिन किस तरह पलक झपकते ही गुज़र गए।

इस साल लोगों को और मुझे भी विभिन्न कारणा से कुछ आशंकाएं थां, कुछ लोगों ने पत्र लिखे तथा चिंता प्रकट की। लोग स्वयं, मैं तथा जमाअत के लोग भी दुआएँ कर रहे थे। अतएव अल्लाह तआला ने समस्त शंकाआं तथा भय को अमन में बदल दिया, फैली हुई महामारी कोविड भी एक कारण थी, अतएव इसका कुछ प्रभाव तो सम्भवतः कुछ सम्मिलित होने वालों पर हो परन्तु साधारणतः अल्लाह तआला की अति कृपा है।

हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाह ने जलसे के अगले ख़ुत्बः की अनुकूलता से कार्यकर्ताओं को धन्यवाद, शामिल होने वालों की अभिव्यक्तियाँ तथा अल्लाह तआला की कृपाओं के विषय में इरशाद फ़रमाया- पहले तो मैं समस्त कार्यकर्ताओं को धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने जलसे की तय्यारी से लेकर वाईन्ड-अप तक निःस्वार्थ होकर काम किया तथा अब तक किसी न किसी अवस्था में जारी वाईन्ड-अप का काम कर रहे हैं, फिर जलसे के चलते विभिन्न विभागों में पुरुष कार्यकर्ताओं तथा महिला कार्यकर्ताओं ने साधारणत्या अपनी प्रतिभाओं के अनुसार अच्छा काम किया, जिसके लिए समस्त शामिल होने वालों को आभारी होना चाहिए।

कुछ त्रूटियाँ तथा कमज़ोरियाँ भी सामने आईं हैं, इसका वर्णन करते हुए हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- इतने बड़े निज़ाम में ये कमज़ोरियाँ हो जाती हैं परन्तु व्यवस्थापकों का काम है कि इन

दुर्बलताओं तथा त्रूटियों को दूर करें। उदाहरणतः लजना के खाना खिलाने के विभाग की कुछ शिकायतें अथवा कुछ अन्य बातें हैं, लोगों के पत्र जो इसक विषय में आए हैं वे मैं साथ साथ व्यवस्था करने वालों को भिजवा रहा हूँ, इसके अनुसार निरीक्षण करके अपनी लाल किताब में यह कमियाँ लिख कर अगले साल हर एक विभाग में और अधिक सुन्दर व्यवस्था करने की कोशिश करनी चाहिए।

एम टी ए ने भी बहुत अच्छी कवरेज दी है इस बार स्टूडियो भी पूरे का पूरा इन्होंने स्वयं ही तय्यार किया और इससे से कई हज़ार पाउंड की बचत भी हुई। इस साल यह भी था कि बहुत से उन्नत देशों तथा प्रगति शील देशों को जलसे की कार्यवाही के दौरान मिला दिया जिससे यहाँ बैठे हुए लोग भी अन्य देशों में रहने वाले अपने भाईयों को देख रहे थे, एक प्रकार की एकता थी जिसके दर्शन हमने एम टी ए के कैमरे की आँख के द्वारा किए। यह अल्लाह तआला की विशेष कृपा है, एम टी ए के कारकुन इस बात पर धन्यवाद के पात्र हैं कि उन्होंने अहमदिया जमाअत की इकाई को एम टी ए के माध्यम से पूरे विश्व को दिखा कर उनके मुंह बन्द किए।

तत्पश्चात हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाह ने कुछ अपनों, ग़ैरों, नौमुबाईन तथा पत्रकारों की विभिन्न अभिव्यक्तियों के प्रकाश में अल्लाह तआला की कृपाओं का वर्णन करते हुए फ़रमाया कि जलसे के द्वारा किस प्रकार अल्लाह तआला ने दुनिया में इस्लाम का सन्देश पहुंचाया।

लोगों को ख़लीफ़-ए-वक़्त से प्यार तथा स्नेह के सम्बंध को बयान करते हुए फ़रमाया- नाईजेरिया के एक ग़ैर-अहमदी विद्वान हैं अबू बकर सैनी साहब जो नियामे नगर में एक मस्जिद के इमाम भी हैं, वे कहते हैं कि मुझे सबसे अधिक जिस बात ने प्रभावित किया, वह लोगों का ख़लीफ़-ए-वक़्त से प्यार और मुहब्बत का सम्बंध है और किस तरह लोग ख़लीफ़-ए-वक़्त के एक इशारे पर सम्पूर्ण आज्ञा पालन की अभिव्यक्ति कर रहे थे, पूर्णतः ख़ामोशी तथा मौन छाया हुआ था सम्बोधनों के समय। फिर कहते हैं कि एसा लगता है कि यह मुहब्बत स्वयं ख़ुदा तआला ने लोगों के दिलों में डाली है क्यूँकि इसमें बनावट का कोई निशान नहीं था।

बर्कीना फ़ासो के एक ग़ैर अज़-जमाअत दोस्त इस्हाक़ साहब कहते हैं- आपका जलसा सालाना बहुत शानदार था, इसकी मिसाल नहीं मिलती, इतने लोगों का एक स्थान पर एकत्र होना किसी चमत्कार से कम नहीं और एक इमाम का अनुसरण, यह जलसा अपनी मिसाल आप है, कोई माने या न माने आज वास्तविक इस्लाम अहमदियत ही है और वह दिन दूर नहीं जब लोग इस वास्तविकता को पहचान लेंगे और इसमें दाख़िल हो जाएँगे।

फिर फ्रंच ग्याना में एक सीरियन ग़ैर अज़-जमाअत हैं, पहली बार जलसा देखा इन्होंने। अरबी बोलने वालों के लिए मस्जिद में एम टी ए अल-अर्बिय्या के माध्यम से काररवाई देखने की व्यवस्था भी थी। ये कहते हैं कि मैं पहली बार जमाअत का पैग़ाम सुन रहा हूँ और पहली बार मैंने आपके ख़लीफ़ः की तक़रीर सुनी है, मैं बड़ा प्रभावित हुआ हूँ कि मुसलमानों में एक ऐसा संगठन है जो इस तरह इस्लाम का वास्तविक पैग़ाम दुनिया में पहुंचा रहा है तथा एक ख़लीफ़ः की बैअत में सारी दुनिया में काम कर

रहा है। मैं इन्शाअल्लाह अब अवश्य आपकी जमाअत के बारे में अध्ययन करूँगा आर अधिक शोध करूँगा।

लाईबेरिया के एक ग़ैर मुस्लिम मेहमान कहते हैं- मैं अहमदिया ख़लीफ़ः के सम्बोधन को सुनकर बड़ा प्रभावित हुआ हूँ....इससे पहले मैंने सुन रखा था कि अहमदिया जमाअत बड़ी सुसंगठित जमाअत है, आज अपनी आँखों से भी देख लिया है कि किस तरह अहमदिया जमाअत अपने लीडर के हाथ पर संयुक्त तथा विश्व में शांति की कोशिश में व्यस्त है।

ज़ैम्बिया के एक ईसाई पादरी साहब जलसे के अन्तिम दिन हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाह का अन्तिम सम्बोधन सुन कर अति प्रभावित हुए तथा अपनी भावनाओं को व्यक्त किया कि आपके ख़लीफ़ः का सम्बोधन आश्चर्यपूर्ण था....मैं यही समझता था कि इस्लाम ने महिलाओं के अधिकारों का हनन किया है तथा महिलाओं को किसी प्रकार की स्वतंत्रता नहीं दी, किन्तु आज यह सम्बोधन सुन कर मेरा दृष्टिकोण बदल गया है और मैं इस बात को करते हुए तनिक भी नहीं शर्माउंगा कि इस्लाम ने स्त्री को जो अधिकार दिए हैं वे ईसाईयत ने नहीं दिए।

आयवरी कोस्ट के एक दोस्त जिनको अभी अहमदियत की तबलीग़ की जा रही है, कहते हैं कि उन्होंने पहली बार कोई जलसा सीधे टी वी के माध्यम से देखा है तथा जलसे का कुशल प्रबन्ध देख कर बहुत प्रभावित हुए, इतनी बड़ी संख्या का सुसंगठित तथा शिष्टाचार के साथ एक प्रोग्राम में सम्मिलित होना बताता है कि ख़िलाफ़त के प्रशिक्षण का उन पर गहरा प्रभाव है। उन्हें पता तो नहीं था कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हाथ पर लोग कैसे बैअत करते हैं किन्तु आज ख़लीफ़ः के हाथ पर लोगों को बैअत करता देख जो गहरा प्रभाव दिल पर हुआ और जो मनोदशा है, वह बयान नहीं की जा सकती।

जलसे के तीन दिनों से लाभान्वित होने वाली कैमरून की स्थानीय जमाअत की एक महिला ने जलसे की समाप्ति पर लोगों को उपदेश दिया कि हमारा सौभाग्य है कि हमारे पास एम टी ए है, यह एक टी वी चैनल ही नहीं वरन एक स्कूल तथा युनीवर्सिटी है जहाँ इंसान प्रतिदिन ज्ञान सीखता है, हमने भी इन तीन दिनों में बड़ा ज्ञान पाया है....हर एक को इससे लाभ लेना चाहिए तथा यथावत रूप से घरों में इसे देखना तथा बच्चों को भी दिखाना चाहिए ताकि सबका इस्लामी ज्ञान बढ़े, विशेषतः ख़लीफ़ः वक़्त के ख़ुत्बात और सम्बोधन अवश्य सुनें ताकि हमारा ईमान बढ़े।

कांगो कंशासा से ही एक अन्य अभिव्यक्ति है, अलीबो जमाअत में जलसे की काररवाई देखने के लिए हंम्बली मुसलमानों के इमाम को आमन्त्रित किया गया। जलसे के अन्त में वे कहने लगे कि जिस तरह अहमदिया जमाअत ने इस्लाम की उस मूल शिक्षा को पेश किया है जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमें दी थी, मेरी दृष्टि में यह जमाअत की ही विशेषता है, मैं भी चाहता हूँ कि कुछ भी करके जमाअत में शामिल हो जाऊँ, अल्लाह मुझे इसकी तौफ़ीक़ दे। अल्लाह तआला कर, अल्लाह इनको सामर्थ्य प्रदान करे।

एक अलबानियन लड़की जिसको अहमदियत की तबलीग़ की गई, कहने लगीं कि जलसा सालाना यू.के. एक महामान्य आयोजन था जिसमें सम्मिलित होने वालों की संख्या अत्यधिक थी, मैं अभी तक जमआत में शामिल तो नहीं हुई किन्तु इस जलसे से मुझे प्रेरणा मिली है कि मैं इसके महत्त्व तथा सच्चाई के विषय में गम्भीरता पूर्वक विचार करूँ।

आस्ट्रेलिया के एक नौमुबाय कहते हैं कि आलमी बैअत मेरे लिए अदभुत अनुभव थी, उस समय मैं जिस रूहानी अवस्था से गुज़रा, इससे पहले मैंने वह अवस्था कभी अनुभव नहीं की, एक ऐसा रूहानी वातावरण था जिसने मुझे मन की शांति एवं संतोष प्रदान किया।

यमन से शीमा क़ासिम साहिबा कहती हैं कि हमने जलसे की कारवाई देखी, ऐसा लगता था कि हम जन्नत में हैं, इस्लाम का सूरज हम पर दोबारा निकला है और हमारे दिलों तथा आत्मा को शुद्धि प्रदान की है। हममें वास्तविक ईमान, मुहब्बत, एकता तथा नैतिकता की आत्मा फूंकी गई है, हम आपसे दूर थे लेकिन हमारे दिल आपके साथ थे, हम एक ही घर में मौजूद थे, एक अहमदी के अतिरिक्त कोई और इस सम्बंध को अनुभव नहीं कर सकता....मौला करीम ख़िलाफ़त को स्थाइत्व प्रदान करे, इसके बिना न हमारा कोई उद्देश्य है, न अस्तित्व।

कबाबीर की एक अरब महिला दुआ साहिबा कहती हैं कि बैअत के समय मुझे आभास था कि हम वास्तव में ख़लीफ़-ए-वक़्त के साथ हैं और हमारे बीच में न कोई देश तथा न कोई समुद्र है, मुझे लग रहा था कि इतनी अधिक प्रसन्नता के आभास से मेरा दिल फट जाएगा।

प्रतिनिधि पत्र कार बी.बी.सी.साउथ, एडवर्ड सालट ने कहा कि मैंने जलसे में बहुत अच्छा समय व्यतीत किया, आतिथ्य अति सुन्दर था, विभिन्न सम्बोधन सुन कर भी बहुत अच्छा लगा, भविष्य में भी आप लोगों के साथ काम करूँगा।

हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाह ने ख़ुत्बे के अन्त में मुकर्रमा नुसरत क़ुदरत सुलताना साहिबा पतनी मुकर्रम क़ुदरतुल्लाह अदनान साहब ऑफ़ कैनेडा, आधी शताब्दी से अधिक सिलसिले की सेवा करने का सौभाग्य पाने वाले, वाक़िफ़े ज़िन्दगी मुकर्रम चौधरी लतीफ़ अहमद झमठ साहब और मुकर्रम मुशताक़ अहमद आलम साहब पुत्र मुकर्रम मुहम्मद आलम साहब ऑफ़ मीरपुर कशमीर का सद्वर्णन फ़रमाया तथा जुम्अतुल मुबारक की नमाज़ के बाद इनकी नमाज़े जनाज़ा ग़ायब भी पढ़ाने की घोषणा फ़रमाई।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا
مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا
عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ. عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ
وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ.

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, समपर्क करें-9781831652

टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131